Self Respect

May 17th,2014

✓अभी बच्चे जानते हैं कि हर एक को वर्सा मिलना है बाप से ।

✓यह ईश्वरीय मत तुम्हारी 21 जन्म चलती है ।

✓पुरानी दुनिया को नया बनाना, यह भी तुम समझते हो । दुनिया के मनुष्य तो कुछ नहीं जानते ।

✓अभी तुम्हारी आत्मा बुद्धियोग बल से सोने का बर्तन होती जाती है ।

✓यह है सब गुप्त ज्ञान । मनुष्य क्या जानें ।

✓ बच्चों को पुरुषार्थ इतना करना है जो अन्त में बाप की ही याद हो और स्वदर्शन चक्र भी याद हो, तब प्राण तन से निकलें । तब ही चक्रवर्ती राजा बन सकेंगे ।

- ✓इस पुरुषोत्तम संगमयुग को भी तुम बच्चे ही जानते हो | हम अभी ब्राह्मण बने हैं, प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान | बाप हमको पढ़ाते हैं | ब्राह्मण बनने बिगर हम देवता कैसे बनेंगे |

- ✓आत्म-अभिमानी सबको भाई-भाई ही देखेंगे | शरीर की बात नहीं रहती है | सोल बन गये फिर शरीर में लगाव नहीं रहेगा इसलिए बाप कहते हैं यह बहुत ऊँची स्टेज है |

- ✓यह लक्ष्मी-नारायण जब थे तो पवित्रता, सुख, शांति, सब थी | पवित्रता की ही मुख्य बात है | मनुष्यों को यह पता नहीं है कि सतयुग में देवता पवित्र थे |

- ✓इस समय पवित्र होने से फिर हम 21 जन्म पवित्र रहते हैं | गोया श्रीमत पर हम वाइसलेस वर्ल्ड स्थापन कर रहे हैं | श्रीमत है ही बाप की | गायन भी है मनुष्य से देवता.....अभी सब मनुष्य हैं जो फिर देवता बनते हैं | अब श्रीमत पर हम डीटी गवर्मेन्ट स्थापन कर रहे हैं |

अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग | रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते |